मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

29-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - बेहद का बाप आया है तुम बच्चों को अपने साथ ले जाने, इसलिए अब बाप का बनकर उनकी श्रीमत पर चलो"

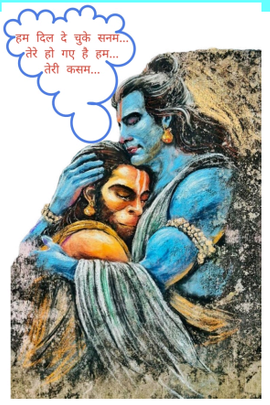

प्रश्नः- बाप अपने बच्चों की तकदीर ऊंची बनाने के लिए कौन सी श्रेष्ठ मत देते हैं?

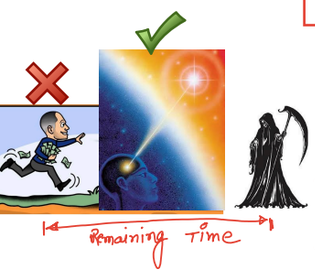

As much AS Possible

उत्तरः- मीठे बच्चे मौत के पहले जितना हो सके याद में रहने का पुरुषार्थ कर लो, इससे ही तुम्हारी कमाई है। मेरा बच्चा बनकर कभी भूल से भी कोई पाप कर्म नहीं करना। भल माया के कितने भी तूफान आयें लेकिन पतित तो कभी नहीं बनना।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

Point for Intoxication

29-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

v/s

सोचा ना कभी पहले, बिन मांगे वो पाया
जिसे ढूंढ रही दुनिया, उसने हमे अपनाया
कोई पूछे कौन मिला, मुख कैसे बतलाए
वरदान लुटाने वाले, सद ज्ञान सुनाने वाले

डूब जाओ इस नारायणी नशे में...

"दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है,
मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है।"
- निदा फ़ाज़ली

पूछो अपने आपसे...
कहीं हमारी भी स्थिति ऐसी ही तो नहीं है ना,
जब की सारे संसार का सार स्वयं भगवान(पारस मणी)
हमें मिल गए हैं और हम उनको मिट्टी के समान वैल्यू
देकर चल रहे हैं...?

पुछो अपने आप से...

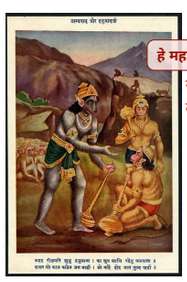

हे महावीर, अब तो जागो....
सोचो तुमको कौन मिला है,
कौन तुम्हारा साथी है।

ओम् शान्ति। शिव भगवानुवाच। तुम बच्चे तो समझेंगे शिवबाबा हमें समझाते हैं। तुम हो संगमयुगी। शिवबाबा के सम्मुख बैठे हो। वह कलियुगी मनुष्य शिवबाबा के जड़ मन्दिर में जाकर बैठते हैं। चढ़ाओ नशा... फ़र्क समझते हो ना। Feel the Force बुद्धि का ताला कुछ खोलो भी। तुम समझते हो हम चैतन्य शिवबाबा के पास बैठे हैं। बाबा हमसे सम्मुख वार्तालाप कर रहे हैं। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा राजयोग सिखला रहे हैं और दूसरी तरफ देखो मनुष्य शिवबाबा की पूजा कर रहे हैं। अमरनाथ पर, काशी पर जा रहे हैं ढूँढने। फिर तुम यह घड़ी घड़ी भूल क्यों जाते हो कि हम शिवबाबा के पास बैठे हैं, जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। उनकी कितनी महिमा है। उनको तुम बाबा-बाबा कहते हो। जानते हो हम शिवबाबा की मत पर चल विश्व के मालिक बनने का वर्सा ले रहे हैं। वह मन्दिरों, तीर्थों आदि पर धक्के खाते रहते हैं और तुम वर्सा ले रहे हो। फ़र्क देखो कितना है। तुम्हारी भेंट में वह कितने बुद्ध हैं। शिवबाबा कहते हैं मैं तुम्हारा ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। मैं तुमको वर्सा देने आया हूँ। वह गॉड फादर को बुलाते रहते हैं। यहाँ तो तुम v/s गॉड फादर के सम्मुख

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥
सम्पूर्ण प्राणियोंके लिये जो रात्रिके समान है, उस नित्य ज्ञानस्वरूप परमानन्दकी प्राप्तिमें स्थितप्रज्ञ योगी जागता है और जिस नाशवान् सांसारिक सुखकी प्राप्तिमें सब प्राणी जागते हैं, परमात्माके तत्त्वको जाननेवाले मुनिके लिये वह रात्रिके समान है॥ ६९ ॥ अध्याय - 2

बैठे हो। यहाँ बुद्धि में बैठता है फिर घर जाने से भूल क्यों जाते हो! यहाँ तुम्हारे लिए दिन है, वहाँ उनके लिए रात है। वह चिल्लाते रहते हैं, चढ़ाओ नशा... तुम सम्मुख में बैठे हो कहते हो तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से सुनूँ। परन्तु घर जाकर भूल जाते हो। माया बड़ी प्रबल है। शिवबाबा के बच्चे बन पुजारी से पूज्य बनने का पुरुषार्थ भी करते हैं फिर बाहर जाकर पुजारी बन पड़ते हैं। शिवबाबा के जड़ मन्दिर में जाते रहते हैं।

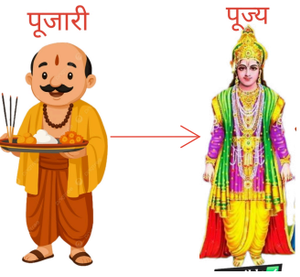

काशी या वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर के कगन में एक दो मंजिला प्राचीन इमारत है। इस भवन में एक कुआँ है जिसमें शिवलिंग स्थापित है। कहा जाता है कि इस कुएँ का पानी सीधे गंगा नदी से जुड़ा हुआ है। इमारत की पहली मंजिल पर, कुएं के मुहाने के समान काशी जाए में कई गुलिये बादशाह तलवारें आड़े-बेढ़े रख कर जमीन से पक्का चिनवा दिया गया है ताकि इधर से उधर ना हो। इस भवन की छत बहुत ढलान नुमा छत है। जो भक्त काशी कलवट में अपने जीवन का बलिदान देना चाहते हैं, वे पहले विश्वनाथ मंदिर में भगवान शिव की पूजा करते हैं और फिर तलवारों के इस कुएं में गिर जाते हैं। जब वह इसकी ऊँचाई से, तलवार और आरी पर गिरता है, तो उसका शरीर टुकड़ों में टूट जाता है और कुएं में शिवलिंग पर गिर जाता है। फिर गंगा अपनी लहरों के साथ उस शरीर को अपने में ले लेती है। धीरे-धीरे इस प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया, कुएं को आगे और तलवार हटा दिए गए और इसे सील कर दिया गया।

बाबा ने कई मुलिलयों में काशी कलवट का उल्लेख किया है। बाबा का कहना है कि भगवान ने इस तरह के हिंसक बलिदान के लिए कभी नहीं माँगा और न ही स्वीकार करेंगे। व्यक्ति के अन्दर जो भी कमी कमजोरी है, संस्कार है, जहाँ अपनापन है, मोह है उसको अर्पित करना है, उसे बलि चढ़ाना है। और एक बाप की ही याद रहे, यह है सच्ची काशी कलवट खाना

यहाँ तो बाप समझाते हैं बच्चे, श्रीमत पर चलने से ही (only) तुम श्रेष्ठ बनेंगे। मुख्य है ही पवित्रता। वहाँ जड़ चित्रों के आगे जाकर काशी कलवट खाते हैं। यहाँ तो चैतन्य में बैठे हैं। यहाँ काशी कलवट खाने की बात नहीं। यह है जीते जी मरना। बाप कहते हैं श्रीमत पर चलो। यहाँ से बाहर जाने से ही बाप को भूल जाते हैं। कभी चिट्ठी आदि भी नहीं लिखते। कोई तो ऐसे हैं जो कभी देखा भी नहीं है। वह तड़फते-तड़फते चिट्ठियाँ लिखते रहते और जो सम्मुख मिलकर जाते हैं वह फिर एकदम भूल जाते

हैं। तुमको तो शिवबाबा पर बलि चढ़ना है ना। भक्ति मार्ग में शिवबाबा से मिलने के लिए काशी कलवट खाते थे परन्तु वह तो मिल नहीं सकते। अब बाप चैतन्य में आकर कहते हैं बच्चे मेरा बनो। मैं आया हूँ ले चलने। बिगर पवित्र बने तो चल नहीं सकते। पवित्र बनाने मुझे ही आना पड़ता है। सर्व का सद्गति दाता बाप तुम्हारे पास बैठा है। तुमको राजयोग सिखा रहे हैं, जो गीता के भगवान ने सिखाया था। उन्होंने श्रीकृष्ण को भगवान कह दिया है। तुम जानते हो गीता का भगवान शिवबाबा है। तुम चिट्ठी भी ऐसे लिखते हो - शिवबाबा केयरआफ ब्रह्मा। तुमको सम्मुख बैठ बाप समझाते हैं। फिर भी नशा नहीं चढ़ता है। ओहो! शिवबाबा ने हमको गोद में लिया है। धर्म का बच्चा बनाया है। परन्तु सबको तो यहाँ पर नहीं रखेंगे ना। हजारों बच्चे हैं। सबको यहाँ कैसे रखेंगे, इतनी जगह कहाँ है! बाप कहते हैं तुमको रहना अपने घर में ही है। बाप को याद करना है। सबसे मीठा जो बेहद का बाप है, उनके तुम बच्चे बने हो।

जिसको पाने के लिए लोग अपना गला भी उतार कर रखने को तैयार है..

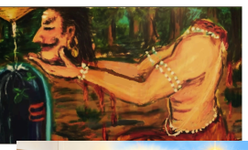

चढ़ाओ नशा...

भगवानुवाच गीता का भगवान शिवबाबा है, न कि श्रीकृष्ण, यह समझना है।

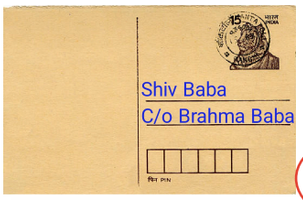

अखिल कोटि ब्रह्मांड नायक

How lucky and Great we are...!

खुलते ही आंख हमें मिलते
हर पल वो साथ मेरे चलते
कितना वो प्यार हमे करते
उनकी पलकों में हम पलते
हम खुशनसीब उनको पाकर
जिंदगी हमारी गाती है
भगवान हमारा साथी है

इतना दुलार मां की ममता
हम प्यार पिता का पाते है
शिक्षा देते, रक्षा करते
अपना सर्वस्व लुटाते है
प्यारी मुरली प्रति दिन
हमको
आती प्रभु प्रेम की भाती है
भगवान हमारा साथी है

वो खुदा दोस्त है खिदमत में
हाजिर है हजार भुजाओं से
अपनी किस्मत के क्या कहने
सिर पर है हाथ दुआओं के
ऐसा साथी किसका होगा
ये सोच आंख भर आती है
भगवान हमारा साथी है

Points: G ... T, Sky

डूब जाओ इस नारायणी नशे में...

याद रहे...

अभी नहीं तो कभी नहीं

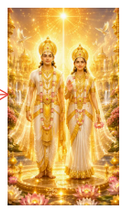

बाप समझाते हैं बच्चे, तुम काम-चिता पर बैठ जल मरे हो। अब तुम ज्ञान चिता पर बैठ देवता बनो। देवताओं की पूजा भी करते हैं, परन्तु समझते कुछ भी नहीं। यह भी ड्रामा की भावी कहेंगे। अभी तुम चैतन्य शिवबाबा के पास बैठे हो। गाया भी जाता है शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना करते हैं। बाप समझाते हैं बच्चों, कोई भी पाप कर्म नहीं करो। देह-अभिमान में नहीं आओ। तुमको तो चलते फिरते साजन को याद करना है। जिसको तुम आधाकल्प से याद करते थे, वह अब तुम्हारी सर्विस में उपस्थित है। रूहानी सोशल वर्कर है। तुमको रूहानी सर्विस सिखलाते हैं। सोशल वर्क के हेड्स भी होते हैं ना। यह है रूहानी। वह होते हैं मनुष्य सोसायटी की जिस्मानी सर्विस करने वाले। अभी देखो वह कहते हैं गऊ का कोस करना बन्द करो। तुम लिख सकते हो कि एक दो पर काम कटारी चलाना - यह सबसे बड़ा कोस है। पहले तो यह बन्द करो। जिसके लिए ही भगवान ने कहा है काम महाशत्रु आदि-मध्य-अन्त दुःख देने वाला है। तुम गीता के भगवान को भूल गये

जरा सोचो तो सही... कौन कह रहा है तुमसे...

Refer last Page

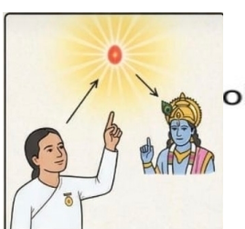

olden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

हो। बाबा को तो वन्डर लगता है। एक तो अमरनाथ पर, पहाड़ों पर धक्के खाते रहते हैं, समझते हैं पार्वती को वहाँ अमरकथा सुनाई। अब एक पार्वती को सुनाने से क्या होगा! बाप समझाते हैं यह सब पार्वतियाँ हैं। सबको अमरकथा सुना रहे हैं। बाप कहते हैं बच्चे 84 जन्म लेते-लेते अब मृत्युलोक में आकर पहुँचे हो। अच्छा लक्ष्मी-नारायण कहाँ गये, क्या वापिस गये वा ज्योति ज्योत समाये ?

सूर्यवंशी राजा-रानी, प्रजा वह सब गये कहाँ? जरूर सतोप्रधान से 84 जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बन गये होंगे। समझते हो ना! यह ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा बैठ समझाते हैं। बच्चों, अभी मैं तुम्हारी तकदीर बनाने आया हूँ, फिर तुम तकदीर को लकीर क्यों लगाते हो!

Simple Logic

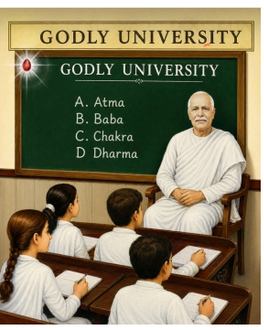

पुछो अपने आप से...

Feel the Force

कुछ तो समझो। मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाने आया हूँ। तुम मेरी मत पर नहीं चलेंगे! घर जाने से याद क्यों भूल जाते हो! बाप बार-बार समझाते हैं बच्चे, अभी तुम संगमयुगी हो। वह कलियुगी हैं। तुम पूज्य, वह पुजारी। तुम्हारा भटकना अभी बन्द है। भल वह तुमको नास्तिक समझते हैं, तुम उनको कहते हो नास्तिक। वह कहते हैं तुम भक्ति नहीं

करते हो इसलिए नास्तिक हो। तुम कहते हो तुम बाप को नहीं जानते हो इसलिए नास्तिक हो। तुम कहते हो हम आस्तिक हैं। बाप को जानकर वर्सा लेते हैं। तुम नहीं जानते हो तो धक्के खाते रहते हो।

कुम्भ के मेले पर भी कितने जाते हैं, फिर दान-पुण्य करते हैं। अब बाप कहते हैं यह सब बातें छोड़ो। तुमको ज्ञान का सागर मिला है फिर और कहाँ जायेंगे। यह ज्ञान नदियाँ हैं। ज्ञान सागर के पास ज्ञान स्नान कराने तुमको ले आते हैं। कितने अच्छे-अच्छे बच्चे बाप के पास आकर फिर जाए गन्द करते हैं।

कोई तो बाप की मत पर चलते हैं। पूछते हैं बाबा विनाशी धन कैसे सफल करें! तो फिर उनको

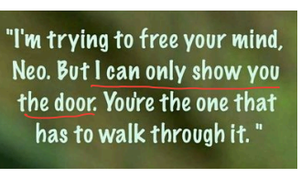

I can only show you the door...

समझाया जाता है- डूबी नांव से जितना भी निकले वह अच्छा है। भारत की सेवा में लगाए उनको सफल कर दो, कोई सेन्टर खोल दो। यह चित्र भी कितने बनते रहते हैं। बाबा के पास ऐसे-ऐसे बच्चे हैं जो कहते हैं जब जरूरत पड़े तो बाबा मुझे याद करना, हम मदद करने के लिए हाज़िर हैं। यज्ञ के अच्छे-अच्छे काम के लिए दरकार हो तो मुझे याद करना। बाबा कहते हैं - हम किसको याद नहीं करते जो करना है सो करो। हम तो दाता हैं। हम तो आये

Note it down

Point to ponder deeply...

Don't be oversmart infront of "Bapdada"

अचानक,
एक समय के बाद आप देना चाहेंगे तो भी बाबा स्वीकार नहीं करेंगे।
बाबा कोई कच्चा सर्राफ नहीं है।

n = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धार वा

शाहों का शाह मेरा बाबा

ही हैं भारत को स्वर्ग बनाने, तुम भी स्वर्ग में जायेंगे। जितना करेंगे उतना पायेंगे। परन्तु जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा सिर पर है, उसे उतारना है। नहीं तो उसकी बहुत सजाये हैं। स्वर्ग में तो जायेंगे परन्तु सजायें रह गई तो पद नहीं पा सकेंगे। यह तो गायन है सांवलशाह की हुण्डी सकारी। इनको कोई परवाह नहीं है। बाबा कहते हैं हुण्डी आपेही भरेगी।

Mind very well...

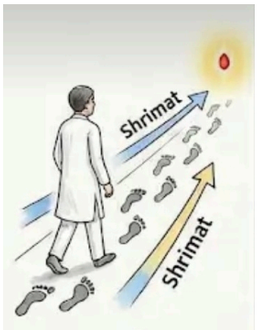

तुम बच्चों को श्रीमत पर चलना है, इसमें ही कल्याण है। अकल्याण कभी मत समझो। समझो देहली जाते रास्ते में टांग टूट पड़ती है, इसमें भी समझो कल्याण है। आत्मा तो नहीं टूटी ना। टांग टूटी, हर्जा नहीं। मैं तो तुम्हारी आत्मा से बात करता हूँ। बाप समझाते हैं यह रावण राज्य है तब तो जलाते हैं। हम क्या थे, बाबा ने हमको क्या से क्या बना दिया है। दुनिया की हालतें देखो क्या हैं! अभी बाप तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं तो उनकी मत पर चलना चाहिए। कोई पाप का काम नहीं करना चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र बनो। बस यह सत्य नारायण

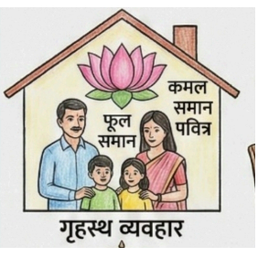

असित-गिरि-समं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे,
सुर-तरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

"हे शिव, यदि नीले पर्वत को समुद्र में मिला कर स्याही तैयार की जाए, देवताओं के उद्यान के वृक्ष की शाखाओं को लेखनी बनाया जाए और पृथ्वीको कागद बनाकर भगवती शारदा देवी अर्थात सरस्वती देवी अनंतकाल तक लिखती रहें तब भी हे प्रभो! आपके गुणों का संपूर्ण व्याख्यान संभव नहीं होगा।"

29-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

की कथा सुनते रहो। यह कितनी लम्बी है। सारा सागर स्याही बनाओ तो भी इन्ड नहीं हो सकती। तो बाप की मत पर चलना चाहिए ना। तुम जानते हो हम भगवान की श्रीमत पर राजाई पाते हैं, मनुष्य से देवता बनते हैं। मौत तो सामने खड़ा है। अचानक हार्ट फेल होते रहते, एक्सीडेंट में मर जाते हैं। बाप कहते हैं मरने के पहले खूब पुरुषार्थ करो। बाप को याद करते-करते अपनी कमाई कर लो। बेहद के बाप का बनकर फिर पाप किया तो एक का सौ गुणा हो जायेगा। फिर लज्जा भी आयेगा कि मनुष्य क्या कहेंगे? शिवबाबा कहते हैं - मैं धर्मराज से बहुत कड़ी सजायें दिलवाता हूँ। फिर उस समय ऐसे थोड़ेही कहेंगे यह हमारा बच्चा है। इसमें बड़े कायदे हैं। जज का बच्चा पाप करे, कुछ कर थोड़ेही सकेंगे। सजा भोगनी ही पड़े। तो बाप रोज़ समझाते हैं, बच्चे पाप का काम बिल्कुल नहीं करना। सबसे बड़ा विकार का पाप है। भल तूफान बहुत आयेंगे, बाहर बहुत गन्द लगा हुआ है। बात मत पूछो। यह है ही वेश्यालय। समझो कोई बड़े आदमी को तुम समझाते हो और वह स्टूडेन्ट बन जाता है तो कहेंगे ब्रह्माकुमारियों का इनको जादू लगा है। बड़े-बड़े लोग

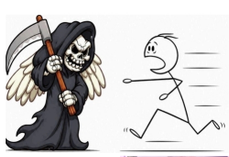

1 x 100

आकर लिखते भी हैं बरोबर आप सच कहते हो। गीता का भगवान बरोबर शिव है, न कि श्रीकृष्ण। अच्छा फिर अपने घर गये खलास। बहुत मेहनत करनी पड़ती है।

बाप समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चे भूलो मत। माया बड़ी प्रबल है। बाबा की याद पारे मिसल है, झट भूल जाती है। बाप कहते हैं भल गृहस्थ-व्यवहार में रहो, सिर्फ पवित्र बनो। पुरुषार्थ तो करना है ना। बाप तो एक-एक बच्चे को बहुत प्यार से कहते हैं, अब मेरा बच्चा बन फिर कोई पाप का काम नहीं करना। बाप को तो जान गये हो ना। सृष्टि चक्र का भी राज़ बुद्धि में है। विद्वान, पण्डित, आचार्य तो अपने को शिवोहम् कह बैठ पूजा कराते हैं। बहुत करके संन्यासी लोग हरिद्वार में जाकर रहते हैं। सारा दिन कहते रहते हैं शिव काशी विश्वनाथ गंगा। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। गाते भी हैं अकालमूर्त। अकाल तख्त कोई सन्दल नहीं होता। अकाल मूर्त बाप का यह रथ तख्त है। जैसे तुम्हारा

यह रथ है। बाबा भी कहते हैं मैंने यह रथ लिया है। भ्रकुटी में, एक तरफ चेला, एक तरफ गुरू बैठा है। जरूर इनके बाजू में ही आकर बैठूंगा ना। मैं भी हूँ बिन्दी। कोई इतना बड़ा नहीं हूँ।

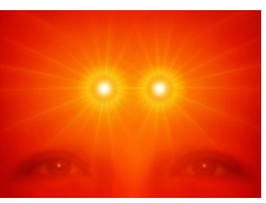

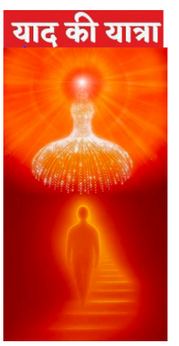

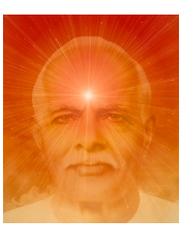

मीठे-मीठे बच्चे यह तुम्हारी सच्ची-सच्ची चैतन्य यात्रा है याद की। बापदादा दोनों मिले हुए हैं। बाप-दादा का अर्थ कोई समझ न सके। तार में सही करते हैं, बापदादा। कोई समझ न सके। अरे शिवबाबा तुम्हारा बाबा है। प्रजापिता ब्रह्मा दादा है ना। तो बापदादा हुए ना। अब बाप कहते हैं मैं आया हूँ इन द्वारा तुमको वर्सा देने। शिवबाबा तुम्हारा भी है। प्रजापिता ब्रह्मा भी सबका बाप हो गया। वर्सा शिवबाबा से मिलता है। तो सही ऐसे करेंगे ना। बापदादा कहा जाता है। शिवबाबा कहते हैं मामेकम् याद करो तो भी बुद्धि में बैठता नहीं है। प्रदर्शनी में हजारों आते हैं। उनसे 8-10 समझने के लिए आते हैं। उनसे भी आहिस्ते-आहिस्ते बाकी जाकर एक दो बचते हैं। कोटो में कोई गाया हुआ है। तो कितनी

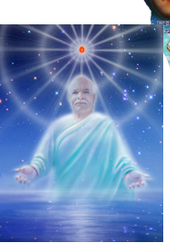

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥ Adhyay (7)

Points: Golde = धारणा, Green = सेवा

प्रदर्शनी करनी पड़े, जो कोटो में कोई निकलें। कई तो 4-5 वर्ष आकर भी गुम हो जाते हैं। बाप को फारकती दे देते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

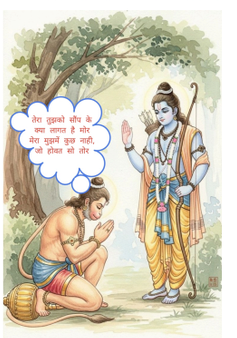

1) शिवबाबा पर पूरा-पूरा बलि चढ़ना है अर्थात् जीते जी मरना है। श्रीमत पर चलना है।

2) शिवबाबा के बच्चे बने हैं तो कोई भी पाप का काम नहीं करना है। पवित्र बन अपना कल्याण करना है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = धारण

वरदानः- ज्ञान की गुह्य बातों को सुनकर उन्हें स्वरूप में लाने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव

ज्ञानी तू आत्मायें हर बात के स्वरूप का अनुभव करती हैं।

most imp to understand

जैसे सुनना अच्छा लगता है, गुह्य भी लगता है लेकिन सुनने के साथ-साथ समाना अर्थात् स्वरूप बनना - इसका भी अभ्यास होना चाहिए।

Call of time/समय की पुकार

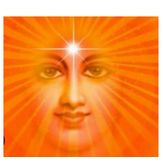

"मैं आत्मा निराकार हूँ" यह बार-बार सुनते हो लेकिन निराकार स्थिति के अनुभवी बनकर सुनो। M.M.M.....imp.

Advantages

जैसी प्वाइंट वैसा अनुभव। इससे शुद्ध संकल्पों का खजाना जमा होता जायेगा और बुद्धि इसी में बिजी होगी तो व्यर्थ संकल्पों से सहज किनारा हो जायेगा।

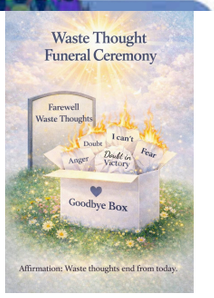

स्लोगनः- नॉलेज एवं अनुभव की डबल अथॉरिटी वाले ही मस्त फकीर रमता योगी हैं।

29-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

कोई भी बात फील करना फेल की निशानी है।
कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन आपकी दृष्टि और वृत्ति उपकारी हो।

जितना अधिकारी उतना निरहंकारी।

ज्ञान में चलने के बाद जो स्व अभिमान आ जाता है, उसका भी त्याग।

M.M.M.....imp.

जब इतनी त्याग की वृत्ति और दृष्टि हो तब स्मृति में बापदादा रहेगा और मुख पर भी यही बोल रहेंगे।

प्रसंग: जब हनुमानजी लंका से लौटकर रामजी को सीताजी का समाचार देते हैं, तब प्रभु प्रेम से उन्हें उठाने के लिए अपना हाथ उनके सिर पर रखते हैं।

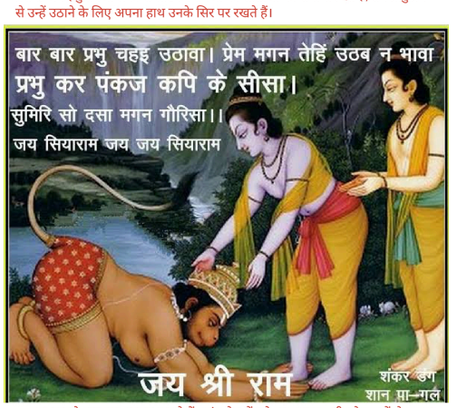

प्रभु उनको बार-बार उठाना चाहते हैं, परंतु प्रेम में डूबे हुए हनुमान जी को चरणों से उठना सुहाता नहीं। प्रभु का करकमल हनुमान जी के सिर पर है। उस स्थिति का स्मरण करके शंकरजी प्रेममग्न हो गए॥1॥

सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर॥
कपि उठाई प्रभु हृदयँ लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा॥2॥
भावार्थ
फिर मन को सावधान करके शंकरजी अत्यंत सुंदर कथा कहने लगे- हनुमान जी को उठाकर प्रभु ने हृदय से लगाया और हाथ पकड़कर अत्यंत निकट बैठा लिया॥2॥

कहु कपि रावन पालित लंका। केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना॥3॥
भावार्थ
हे हनुमान! बताओ तो, रावण के द्वारा सुरक्षित लंका और उसके बड़े बाँके किले को तुमने किस तरह जलाया? हनुमान जी ने प्रभु को प्रसन्न जाना और वे अभिमानरहित वचन बोले- ॥3॥

रावण की समस्त लंका को अकेले हाथों ध्वस्त कर दिया। परंतु "मैंने ये सब किया.." ऐसा अभिमान रिंचक मात्र भी छू नहीं पाया।
आहा.....!
कितनी निरहंकारिता..!
कितनी निर्मानता...!
कितनी निमित पन की दृढ़ भावना..!
(मैं नहीं अपितु मेरे राम..!)

साखामग कै बड़ि मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई॥
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर गन बधि बिपिन उजारा॥4॥
भावार्थ
बंदर का बस, यही बड़ा पुरुषार्थ है कि वह एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है। मैंने जो समुद्र लाँघकर सोने का नगर जलाया और राक्षसगण को मारकर अशोक वन को उजाड़ डाला,॥4॥

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई॥5॥
भावार्थ
यह सब तो हे श्री रघुनाथजी! आप ही का प्रताप है। हे नाथ! इसमें मेरी प्रभुता (बड़ाई) कुछ भी नहीं है॥5॥

ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल॥33॥
भावार्थ
हे प्रभु! जिस पर आप प्रसन्न हों, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके प्रभाव से रूई (जो स्वयं बहुत जल्दी जल जाने वाली वस्तु है) बड़वानल को निश्चय ही जला सकती है (अर्थात् असंभव भी संभव हो सकता है)॥33॥

Points: G सेवा

If you wish to stay connected, Here is the link

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।
और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010
Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.3.2. रात को सोने की विधि और उससे फायदा:

(अ) बाबा कहते हैं लक्ष्मी-नारायण के चित्र के सामने जाकर बैठो। रात को भी बैठ सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण को देखते-देखते सो जाओ। "अहो! बाबा हमें ऐसा बनाते हैं!" तुम ऐसा अभ्यास करके देखो कितना मजा आता है! फिर सुबह को अपना अनुभव सुनाओ।

(आ) कई बार कहा है — **रात को जब सोते हो, तो आधा घण्टा बाप की याद में बैठ जाना चाहिए।** कम से कम आधा घण्ठा याद में बैठो, फिर सवेरे उठ कर याद करो तो अवस्था अच्छी रहेगी। रात को बाबा की याद में बैठने का नियम रखो तो बहुत अच्छा है। योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपे ही आँखें खुल जायेंगी। खटिया हिल जायेगी। बाबा बहुतों को उठाते हैं। रात को बाबा की याद में सोयेंगे तो सुबह को बाबा आकर खटिया हिलायेंगे। ऐसा भी बहुत अनुभव लिखते हैं। हिम्मते बच्चे मददे बाप तो है ही। अपने ऊपर अटेन्शन रखो। बेहद का बाप कितना रहम करते हैं! बाप की मदद अनुभव करने के लिए मोस्ट बिलवेड बाप को बड़े प्यार से याद करना है।

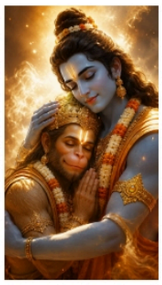

(इ) बच्चे, यह भी कायदा है जास्ती खाने वाले को जास्ती नींद आयेगी। याद में रहेंगे तो खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा खायेंगे। नींद भी बच्चों को टाइम पर करनी चाहिए।

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

अर्जुन बोले—हे कृष्ण! तो फिर यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात् लगाये हुएकी भाँति किससे प्रेरित होकर पापका आचरण करता है?॥ ३६॥

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

श्रीभगवान् बोले—रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह बहुत खानेवाला अर्थात् भोगोंसे कभी न अघानेवाला और बड़ा पापी है, इसको ही तू इस विषयमें वैरी जान॥ ३७॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥

जिस प्रकार धूएँसे अग्नि और मैलसे दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेरसे गर्भ ढका रहता है, वैसे ही उस कामके द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है॥ ३८॥

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च॥

और हे अर्जुन! इस अग्निके समान कभी न पूर्ण होनेवाले कामरूप ज्ञानियोंके नित्य वैरीके द्वारा मनुष्यका ज्ञान ढका हुआ है॥ ३९॥

Enemy Forever

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्॥

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि—ये सब इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम इन मन, बुद्धि और इन्द्रियोंके द्वारा ही ज्ञानको आच्छादित करके जीवात्माको मोहित करता है॥ ४०॥

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥

इसलिये हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियोंको वशमें करके इस ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले महान् पापी कामको अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल॥ ४१॥

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥

इन्द्रियोंको स्थूल शरीरसे पर यानी श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं; इन इन्द्रियोंसे पर मन है, मनसे भी पर बुद्धि है और जो बुद्धिसे भी अत्यन्त पर है वह आत्मा है॥ ४२॥

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

इस प्रकार बुद्धिसे पर अर्थात् सूक्ष्म, बलवान् और अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको जानकर और बुद्धिके द्वारा मनको वशमें करके हे महाबाहो! तू इस कामरूप दुर्जय शत्रुको मार डाल॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

Formidable Enemy

Biggest enemy of soul/human being is not any person/religion, but the 'Kaam vikar' is.

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है॥ ६३॥

Soul

विषयो के चिंतन से आसक्ति
आसक्ति से कामना/काम
कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध
क्रोध से *अत्यंत* मूढ़भाव
मूढ़भाव से स्मृतिमें भ्रम
स्मृति में भ्रम से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश
बुद्धि का नाश हो जाने से पुरुष(आत्मा) अपनी स्थिति से गिर जाता है।

गीता अध्याय 2 - श्लोक 62,63

So, ultimate Root cause as per revered "Geeta" is

Kaam vikar